

ICSE Solved Paper 2018

HINDI

Class-X

(Maximum Marks : 80)

(Time allowed : Three hours)

(Second Language)

This paper comprises two Sections—Section A and Section B.

Attempt all the questions from Section A.

Attempt any four questions from Section B, answering at least one question each from the two books you have studied and any two other question.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

SECTION A

(40 marks)

Attempt all questions.

1. Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics:

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए : [15]

- (i) 'परोपकार की भावना लोक-कल्याण से पूर्ण होती है।' हमें भी परोपकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए। विषय को स्पष्ट करते हुए अपने विचार लिखिए।
- (ii) "आजकल देश में आवासीय विद्यालयों (Boarding Schools) की बाढ़ सी आ गई है। आवासीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है?" — इस प्रकार के विद्यालयों की अच्छाइयों एवं बुराइयों के बारे में बताते हुए वर्तमान में इनकी आवश्यकता पर अपने विचार लिखिए।
- (iii) संयुक्त परिवार के किसी ऐसे उत्सव के आनन्द का विस्तार से वर्णन कीजिए, जहाँ आपके परिवार के बच्चे-बुजुर्ग सभी उपस्थित थे।
- (iv) एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए जिसके अन्त में यह वाक्य लिखा गया हो— 'अन्ततः मैं अपनी योजना में सफल हो सका/हो सकी।'
- (v) नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।



उत्तर. (i) परोपकार

परोपकार = पर + उपकार अर्थात् दूसरों का भला। अपने मित्रों, रिश्तेदारों या संबंधियों पर किया गया उपकार परोपकार की श्रेणी में नहीं आता। परोपकार तो तब कहलाता है, जब हम निःस्वार्थ भाव से किसी का भला करते हैं। मनुष्य ही नहीं, किसी भी प्राणी पर विपत्ति आने पर उसकी सहायता करना ही परोपकार है। परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है। महाकवि तुलसीदास ने भी कहा है —

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

भावार्थ यह है कि दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई पाप नहीं है। हमारी संस्कृति और सभ्यता में परोपकार का एक विशेष स्थान है। भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' पर आधारित है और परोपकार से यह भावना फलती-फूलती

है। परोपकार किसी सीमा में बँधा हुआ नहीं होता, वह तो समस्त जातीय, प्रांतीय और धार्मिक बंधनों को तोड़ देता है। मनुष्य अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर पूरे विश्व को अपने परिवार की तरह समझने लगता है। इस प्रकार परोपकार लोक-कल्याण की भावना से भी जुड़ा होता है। प्रकृति भी हमें परोपकार की शिक्षा देती है। कवि रहीम ने कहा है—

वृक्ष कबहुँ नहिं फल चखै, नदी न संचय नीर, परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।

अर्थ यह है कि वृक्ष अपना फल खुद नहीं खाता, नदी स्वयं पानी नहीं पीती, ये सब तो दूसरों के लिए ही होते हैं।

सूर्य अपनी गर्मी और चाँद अपनी शीतलता निः स्वार्थ भाव से देता है। पशु भी खुद कष्ट सहकर मनुष्य के प्रति वफ़ादारी दिखाते हैं।

परोपकार से हमें प्रसन्नता की अनुभूति होती है। हमें परोपकार करना चाहिए, यह मानवता की रक्षा के लिए आवश्यक है। किसी की मदद करके हमें गर्व होना चाहिए। निः स्वार्थ भाव से की गई सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। अतः हमें परोपकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए।

(ii) आवासीय विद्यालय

आवासीय विद्यालय का अर्थ होता है ऐसा विद्यालय जहाँ बच्चे पूरा समय बिताएँ, वहीं उनके रहने और खाने की व्यवस्था होती है तथा पढ़ाई भी होती है। यह व्यवस्था कोई नई व्यवस्था नहीं है, भारत में प्राचीन काल में 'गुरुकुल' होते थे। आवासीय विद्यालय 'गुरुकुल' का ही नया रूप हैं।

आवासीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में बड़ी उपयोगिता है। इस तरह के विद्यालयों में छात्रों में स्वावलम्बन के गुण आते हैं, वे अपना काम स्वयं करते हैं, दूसरों पर आश्रित नहीं होते। छात्र अनुशासन में रहना सीखते हैं। समय के अनुसार चलना आता है। इस प्रकार सफलता के मूलमंत्र स्वावलम्बन, अनुशासन और समय के साथ चलना छात्र प्रारंभ से ही सीख लेते हैं। अन्य छात्रों के साथ रहते हुए छात्रों का दायरा विस्तृत होता है। समूह में पढ़ना आता है। मिलजुलकर काम करना आता है। दूसरों के दुःख में शामिल होना भी छात्र सीखते हैं। इस प्रकार ऐसे विद्यालयों में छात्र व्यवहारिक शिक्षा भी प्राप्त करते हैं और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं।

आजकल इन विद्यालयों को धन प्राप्ति का साधन बनाया जा रहा है, अतः इनमें बुराइयों का भी समावेश होने लगा है। आर्थिक स्थिति देखकर प्रवेश देना सबसे बड़ी बुराई है। छात्रों को नैतिकता नहीं सिखाई जाती। आजकल ऐसे विद्यालयों से छात्र-छात्राओं के यौन-शोषण के समाचार

भी आते रहते हैं। सुरक्षा की सही व्यवस्था न होना तथा खाने-पीने की व्यवस्था का सही न होना भी बड़ी कमी है। वर्तमान में इस प्रकार के विद्यालयों की आवश्यकता है, क्योंकि संयुक्त परिवार के विघटन के कारण तथा माँ-बाप दोनों की नौकरी के कारण बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं। यहाँ उन्हें एक नया परिवार मिलता है। घर में टेलीविज़न और फोन ध्यान भटकाते हैं, यहाँ समूह में पढ़ने से पढ़ाई के प्रति जागृति आती है। बशर्ते इन विद्यालयों में अच्छा वातावरण और अच्छी व्यवस्था हो।

(iii) विवाह – उत्सव

मैं संयुक्त परिवार में रहती हूँ। मेरे परिवार में मेरे दादाजी-दादीजी, ताऊजी-ताईजी व मम्मी-पापा रहते हैं। मेरे ताऊजी के तीन बच्चे हैं। एक लड़की व दो लड़के। हम दो भाई-बहन हैं। इस प्रकार मैं घर में सबसे छोटी हूँ। मेरे ताऊजी की लड़की मीनल दीदी की शादी तय होने पर मैं बहुत खुश थी। मेरी बुआ के विवाह के समय मैं बहुत छोटी थी, इसलिए मुझे उस समय का कुछ याद नहीं था। मैं दीदी के विवाह-समारोह के लिए बहुत उत्साहित थी।

घर में इस पीढ़ी की पहली शादी थी। ज़ोर-शोर से तैयारी चल रही थी। रिश्तेदारों को निमंत्रण-पत्र भेजे गए। धीरे-धीरे शादी वाला दिन भी आ गया। घर सगे-संबंधियों से भरा हुआ था। कुछ रिश्तेदार तो ऐसे भी थे जिन्हें मैंने पहली बार देखा था। घर में आनंद का वातावरण था।

शादी से पहले के सारे कार्यक्रम मेंदीदी, हल्दी व महिला संगीत सभी आनंददायक रहे। परिवार के बच्चे, बड़े और बुजुर्ग सभी ने महिला संगीत में चार चाँद लगा दिए। बच्चे तो नाचने में ऐसे लगे हुए थे कि खाने-पीने का भी होश नहीं था।

बारात के आते ही दरवाज़े पर हमने फूलों से बारात का स्वागत किया। जयमाला के समय जीजाजी के दोस्तों ने उन्हें ऊँचा उठा लिया, तो हम भी कहाँ पीछे रहने वाले थे सारे भाइयों ने मिलकर दीदी को भी उठा लिया और दीदी ने जीजाजी के गले में माला डाल दी।

खाने के बाद जैसे ही जीजाजी फेरे के लिए मंडप में पहुँचे, वैसे ही मैं उनके जूते लेकर भाग ली। कोई कुछ समझ पाता तब तक तो मैं जूते छिपा चुकी थी। बहुत आनंद आया। दूसरे दिन दीदी की विदाई हो गई। मैं बहुत रोई, पर खुश भी थी कि उन्हें अच्छी समुराल मिली है। इस प्रकार यह उत्सव आनंद के साथ संपन्न हुआ।

(iv) कहानी

मेरी गर्मी की छुट्टियाँ प्रारम्भ हो चुकी थीं। मैं चाहती थी कि इन छुट्टियों में गृहकार्य के अलावा कोई कार्य किया जाए, जो अलग हटकर हो। मैंने बहुत सोचा कि क्या करना चाहिए और अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि गरीब

बस्तियों में जाकर ग्रिबी में पढ़ाई और सफाई के प्रति जागृति लाई जाए और मैंने योजना बनानी प्रारंभ कर दी। मेरी योजना थी कि मैं सुबह जल्दी घर से निकलूँगी और उन बस्तियों में खुद सफाई करते हुए बस्ती के लोगों को जागरूक करूँगी। दस बजे तक घर आकर नहा-धोकर नाश्ता करके गृहकार्य करूँगी और शाम पाँच से सात उस बस्ती के लोगों को शिक्षित करूँगी। मैं मन-ही-मन अपनी योजना पर प्रसन्न हो रही थी।

रात के खाने के समय मैंने अपने माता-पिता को योजना बताई। पर जैसा कि हर अच्छे कार्य के पहले होता है, बाधाओं का आना प्रारंभ हो गया। मेरी माताजी ने कहा- 'तुम लड़की हो अकेली कहाँ भटकोगी और फिर आजकल के लोगों का कोई भरोसा नहीं है। अगर कुछ परेशानी में फँस गई तो ? इससे तो घर के कामों में मेरा हाथ बँटाओ।' पिताजी का कहना था कि- 'तुम कक्षा दसवीं में हो। बोर्ड की परीक्षा है, पढ़ाई पर ध्यान दो।'

मैं भी जिद्दी थी। अच्छे कार्य के लिए योजना बनाई है, तो कार्य तो करना ही है। दूसरे दिन मैंने अपने कुछ खास मित्रों से बात की, वे सब मेरे साथ चलने को तैयार हो गए। माताजी की चिन्ता का निवारण तो हो गया, अब मुझे अकेले नहीं जाना था। पिताजी को भी समझाया कि शेष समय में मैं केवल पढ़ाई करूँगी। मेरी एक मित्र के पिताजी शिक्षक थे, उन्होंने कहा- 'इस नेक काम में मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।' असली समस्या तो अब पैदा हुई। बस्ती में पहुँचते ही सफाई कार्य प्रारंभ किया, तब पता चला कि गंदगी साफ़ करना आसान काम नहीं है। नाक पर रुमाल बाँधकर काम किया। बस्ती वालों ने इतनी अरुचि दिखाई कि हम समझ ही नहीं पाए कि क्या करें ? शाम को पढ़ने के लिए भी बड़ी मुश्किल से दो-चार लोग आए।

मनुष्य के इरादे पक्के हों, तो वह हर बाधाओं से निपट सकता है। हमने नुकड़ नाटक और गानों आदि के माध्यम से बस्ती वालों को समझाया और वे धीरे-धीरे समझने लगे। मैं अकेली थी, कारवाँ बनता गया। कई समाज-सेवी संगठन हमारे सहयोग के लिए आगे आए। इस प्रकार अन्ततः मैं अपनी योजना में सफल हो सकी।

(v) चित्र-प्रस्ताव

प्रस्तुत चित्र में कुछ बच्चे दिखाई दे रहे हैं जो विद्यालय परिधान में होने के कारण विद्यार्थी होने का आभास दे रहे हैं। देखने में ये प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी प्रतीत हो रहे हैं। ये बच्चे हमारे देश के निर्धन परिवारों के लग रहे हैं। ये सभी बच्चे बैग और पुस्तकें लेकर विद्यालय जा रहे हैं। सभी प्रसन्न दिख रहे हैं। वर्तमान समय में साक्षरता का महत्त्व बढ़ गया है। बच्चों की शिक्षा के प्रति सरकार

सचेत है। भारत सरकार ने शिक्षा के अधिकार कानून में 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों के लिए शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य कर दिया। सरकार बच्चों को पाठशाला तक लाने के लिए 'स्कूल चलो' जैसे अभियान चलाती है तथा विद्यालय में उन्हें भोजन (मिड डे मील) देने की भी व्यवस्था की गई है। लड़कियों के लिए भी सरकार 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' 'कन्या विद्याधन' जैसी योजनाएँ लाकर उन्हें शिक्षित करने का प्रयास कर रही है। प्रस्तुत चित्र में भी लड़कियाँ दिखाई दे रही हैं, जिससे लगता है कि लोगों में जाग्रति आई है।

बच्चे देश का भविष्य होते हैं। उनके विकास के लिए आवश्यक है कि उनमें शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया जाए, विशेष रूप से लड़कियों में। इसके लिए प्रशासनिक व सामाजिक संगठनों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग के बच्चों को इन योजनाओं से लाभान्वित किया जा सके। शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए हमें निर्धन व असहाय वर्ग के अशिक्षित बच्चों को विद्यालय से जोड़कर उनके विकास में सहायक बनना होगा, तभी हम इस निरक्षरता के कलंक को धो पाने में समर्थ होंगे। किसी ने सही कहा है-

"पढ़ा लिखा हो हर इंसान।

तब ही होगा, देश महान्।"

2. Write a letter in Hindi in approximately 120 words on anyone of the topics given below:

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए : [7]

- आप अपने विद्यालय के 'सफाई अभियान दल' के नेता हैं। एक योजना के अन्तर्गत आप छात्रों के एक दल को किसी इलाके में सफाई के प्रति जागरूक करने हेतु ले जाना चाहते हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या जी को इसके लिए स्वीकृति हेतु पत्र लिखिए।
- पिछले महीने कुछ प्रयासों द्वारा आपके विद्यालय के छात्रों ने कुछ धनराशि एकत्रित करके मूक-बधिर (deaf and dumb) विद्यालय के विद्यार्थियों की सहायता की थी। इसका वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए और बताइए कि हमें समाज के विकलांग लोगों के प्रति कैसा व्यवहार रखना चाहिए व उनकी सहायता के लिए किस प्रकार के प्रयास करने चाहिए ?

उत्तर (i) सेवा में,

प्रधानाचार्या जी,

सरस्वती विद्या मंदिर,

आगरा

विषय-छात्रों के एक दल को नगला हवेली क्षेत्र में सफाई के प्रति जागरूक करने के लिए ले जाने हेतु।

महोदया,

सनम्र निवेदन है कि हमारा विद्यालय हमेशा से स्वच्छता अभियान का समर्थक रहा है। हमारे विद्यालय में 'सफ़ाई अभियान दल' का गठन भी किया गया है। मैं उस दल का नेता हूँ तथा आपके विद्यालय में कक्षा दस का छात्र हूँ। मैंने सोचा है कि हमारा 'सफ़ाई अभियान दल' साल में दो बार विद्यालय के बाहर जाकर छोटी बस्तियों में लोगों को सफ़ाई के प्रति जागरूक करे। इस योजना के तहत मैं अपने दल को नगला हवेली ले जाना चाहता हूँ। हम विद्यालय की छुट्टी के बाद दो घंटे का समय इस काम के लिए देना चाहते हैं।

अतः आपसे सविनय निवेदन है कि हमें स्वीकृति देने की कृपा करें।

आशा है आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करने का कष्ट करेंगी।
धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

चेतन शर्मा

कक्षा-दसवीं

दिनांक-17/3/20××

(ii)

ए-22

इन्द्रधनुष कॉलोनी,

दयालबाग, आगरा - 5

दिनांक 17 मार्च, 20××

प्रिय मित्र,

मधुर-स्मृति

कल ही तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम कुशलता पूर्वक हो। मैं भी यहाँ सकुशल हूँ।

तुम्हें यह बताने में मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि हमारे विद्यालय के छात्रों ने कुछ धनराशि एकत्रित करके मूक-बधिर विद्यालय के विद्यार्थियों की सहायता की थी। वह धनराशि लेकर हम एक शिक्षक के साथ उस विद्यालय में गए थे। हमने वह धन राशि वहाँ के प्रधानाचार्य को दी। हमें वहाँ के छात्रों से मिलने का अवसर भी मिला।

इन छात्रों-छात्राओं से मिलकर मैंने जाना कि कमियों के बाद भी खुश कैसे रहा जाता है। प्रार्थना-सभा में शान्त भाव से हाथ जोड़कर आँखें बन्द कर सब ईश्वर को इस अनमोल जीवन के लिए धन्यवाद दे रहे थे। मूक-बधिर के लिए विकसित भाषा के ज़रिए वह प्रत्येक विषय का ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। सबसे बड़ी बात ये थी कि वे खुश थे।

हमें समाज के विकलांग लोगों के प्रति संवेदना के साथ-साथ सम्मान की भावना भी रखनी चाहिए और उनकी सहायता का हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए। मेरे लिए यह अनुभव बहुत अच्छा रहा।

घर में सभी को यथायोग्य अभिवादन।

तुम्हारा मित्र

क ख ग

3. Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible :

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

सूर्य अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ अपने घड़े लेकर कुएँ पर जा पहुँचीं। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गईं, परंतु चार स्त्रियाँ कुएँ की पक्की जगत पर ही बैठकर आपस में बातचीत करने लगीं। तरह-तरह की बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी-“भगवान सबको मेरे जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। सच में मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।”

उसकी बात सुनकर दूसरी अपने बेटे की प्रशंसा करते हुए बोली-“बहन मैं तो समझती हूँ कि मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। मैं तो भगवान से कहती हूँ कि वह मेरे जैसा बेटा सबको दे।” दोनों स्त्रियों की बात सुनकर तीसरी भला क्यों चुप रहती? वह भी अपने को रोक न सकी। वह बोल उठी-“मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार है। वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है बहन, मानों उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।”

तीनों की बात सुनकर चौथी चुपचाप बैठी रही। उसका भी एक बेटा था। परन्तु उसने अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहा।

जब पहली स्त्री ने उसे टोकते हुए पूछा कि उसके बेटे में क्या गुण है, तब चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा-“मेरा बेटा ना गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति-सा बुद्धिमान।” यह कह कर वह शांत बैठ गई। कुछ देर बाद जब वे घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी के गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, गीत सुनकर सभी स्त्रियाँ ठिठक गईं। पहली स्त्री शीघ्र ही बोल उठी-“मेरा हीरा गा रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है।” तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसे देखने लगीं। वह गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की तरफ ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद दूसरी का बेटा दिखाई दिया। दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व से कहा, “देखो मेरा बलवान बेटा आ रहा है। वह बातें कर ही रही थी कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिए बगैर निकल गया।”

तभी तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला, तीसरी ने बड़े गद्गद् स्वर में कहा “देखो, मेरे बेटे के कंठ में सरस्वती का वास है। वह भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया।”

वह अभी थोड़ी दूर गया होगा कि चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से आ निकला। वह देखने में बहुत सीधा-सादा और सरल प्रकृति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, “बहन, यही मेरा बेटा है।” तभी उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर रुक गया और बोला, “माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ ने मना किया, फिर भी उसने माँ के सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल पड़ा।

तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से देखती रहीं। एक वृद्ध महिला बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। वह उनके पास आकर बोली, “देखती क्या हो? यही सच्चा हीरा है।”

- पहली तथा दूसरी स्त्री ने अपने-अपने बेटे के विषय में क्या कहा? [2]
- तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को ‘बृहस्पति का अवतार’ क्यों कहा? [2]
- पहली स्त्री द्वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने क्या कहा? [2]
- चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार किया, यह देखकर तीनों स्त्रियों को कैसा लगा? [2]
- बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? समझाइए। [2]

- उत्तर (i) पहली स्त्री ने अपने बेटे के गायन की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह लाखों में एक है। उसका मधुर स्वर सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाते हैं। वह अनमोल हीरा है। दूसरी स्त्री ने अपने बेटे की शक्ति और बहादुरी की प्रशंसा की और उसे आधुनिक युग का भीम बताया। वह बड़े-बड़े पहलवानों को पछाड़ देता है। ऐसा बेटा भगवान सबको दे।
- (ii) तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को ‘बृहस्पति का अवतार’ कहा क्योंकि वह पढ़ते ही सब याद कर लेता है, मानो उसके कंठ में सरस्वती निवास करती हो।
- (iii) पहली स्त्री के पूछने पर चौथी स्त्री ने कहा कि उसका बेटा न तो गायक है, न बहुत बलवान है और न ही बहुत बुद्धिमान।
- (iv) चौथी स्त्री के बेटे ने माँ की मदद की। उसने माँ के मना करने पर भी उसके सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रखा और घर की ओर चल पड़ा। तीनों स्त्रियाँ आश्चर्य से देखती रह गईं क्योंकि जिन्हें वे अनमोल हीरा कह रहीं थीं, उन्होंने कोई सहायता करना तो दूर माँ को देखा भी नहीं।
- (v) बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए, हर संभव उनकी सहायता करना चाहिए। माता-पिता की हमेशा

सेवा करनी चाहिए। किसी क्षेत्र विशेष में महारथ हासिल हो न हो, संस्कारों के महारथी होना चाहिए।

4. Answer the following according to the instructions given :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

- निम्नलिखित शब्दों में से दो शब्दों के विलोम लिखिए: [1]
कीर्ति, निर्मल, विजय, निर्दोष।
- निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : [1]
धनवान, किनारा, दूध।
- निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए : [1]
अपेक्षा, गुण।
- निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए : [1]
प्रदर्शनी लच्छमी, अपरीचीत।
- निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए : [1]
आसमान से बातें करना, उड़ती चिड़िया पहचानना।
- कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए: [1]
 - मोहन और रमेश सच्चे मित्र थे।
[‘मित्रता’ शब्द का प्रयोग कीजिए।] [1]
 - मुझसे कोई भी बात कहने में संकोच न करें।
[रेखांकित के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य को पुनः लिखिए।] [1]
 - शिक्षक ने अपने शिष्य को आदेश दिया।
[वचन बदलिए।] [1]

- उत्तर (i) कीर्ति - अपकीर्ति
निर्मल - मलिन
विजय - पराजय
निर्दोष - दोषी
- (ii) धनवान - अमीर, धनिक।
किनारा - कूल, तट।
दूध - क्षीर, दुग्ध।
- (iii) अपेक्षा - अपेक्षित।
गुण - गुणी।
- (iv) प्रदर्शनी - प्रदर्शनी।
लच्छमी - लक्ष्मी।
अपरीचीत - अपरिचित।
- (v) आसमान से बातें करना - चंद्र नई गाड़ी मिलते ही आसमान से बातें करने लगा।

उड़ती चिड़िया पहचानना – अजय से राज़ मत छुपाना, वह उड़ती चिड़िया पहचानता है।

- (vi) (a) मोहन और रमेश में सच्ची मित्रता थी।
 (b) मुझसे कोई भी बात निः संकोच करें।
 (c) शिक्षकों ने अपने शिष्यों को आदेश दिया।

SECTION B

(40 marks)

Attempt four questions from this Section.

You must answer at least one question from each of the two books you have studied and any two other questions.

साहित्य सागर—संक्षिप्त कहानियाँ

(Sahitya Sagar-Short Stories)

5. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

आनन्दी की त्योंरी चढ़ गई। झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली, “जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ। [‘बड़े घर की बेटी’—प्रेमचंद]

[Bade Ghar Ki Beti—Premchand]

- (i) आनन्दी की त्योंरी क्यों चढ़ी हुई थी? वह किसका इंतज़ार कर रही थी? [2]
 (ii) श्रीकंठ सिंह ने आनन्दी से क्या जानना चाहा? [2]
 (iii) इससे पहले लालबिहारी और बेनीमाधव सिंह श्री कंठ सिंह से क्या कह चुके थे? [3]
 (iv) आनन्दी से घटना का हाल जानकर श्रीकंठ सिंह को कैसा लगा? उन्होंने अपने पिता से क्या कहा? [3]

उत्तर (i) आनन्दी की अपने देवर लाल बिहारी से कहा-सुनी हो गई थी, वह क्रोध में थी। आनन्दी से पहले लाल बिहारी ने श्रीकंठ से शिकायत कर दी कि वह अपने मायके के सामने हमें कुछ समझती ही नहीं है। इस पर श्रीकंठ ने कमरे में आते ही पूछ लिया कि तुमने उपद्रव क्यों मचा रखा है? यह सुनते ही आनन्दी की त्योंरी चढ़ गई।

वह अपने पति श्रीकंठ का इन्तज़ार कर रही थी, क्योंकि वह लाल बिहारी की शिकायत करना चाहती थी।

(ii) श्रीकंठ सिंह ने आनन्दी से जानना चाहा कि उसने घर में उपद्रव क्यों मचा रखा है? यह पूछते ही आनन्दी ने जानना चाहा कि यह आग किसने लगाई है? वह समझ गई थी कि लाल बिहारी ने उसकी शिकायत की है, उसने सारा हाल श्रीकंठ को सुनाया और रोने लगी।

(iii) इससे पहले लाल बिहारी ने श्रीकंठ सिंह से कहा था कि आनन्दी अपने मायके के सामने हमें कुछ समझती ही नहीं है। आप भाभी को समझा दें कि मुँह संभालकर बोला करें। बेनीमाधव सिंह ने भी लाल बिहारी का समर्थन किया।

(iv) आनन्दी से घटना का हाल जानकर शांत स्वभाव के श्रीकंठ सिंह क्रोधित हो गए। आनन्दी के आँसुओं ने उनकी क्रोधाग्नि को बढ़ाने का काम किया। उन्होंने अपने पिता से कहा कि अब वह इस घर में नहीं रह सकता। घर में अन्याय हो रहा है। स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछार होती है। कड़ी बात तो सह लूँ लेकिन लात घूँसे नहीं सह सकता।

*6. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“रात को बड़े जोर का झक्कड़ चला। सेक्रेटेरियट के लॉन में जामुन का पेड़ गिरा। सुबह को जब माली ने देखा, तो उसे पता चला कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।”

[‘जामुन का पेड़’ — कृष्ण चंद्र]

[Jamun Ka Ped-Krishna Chander]

- (i) माली ने यह देखकर क्या किया और क्यों? [2]
 (ii) पहले दूसरे और तीसरे क्लर्क ने क्या कहा? क्या तीसरे क्लर्क को उस दबे हुए आदमी से सहानुभूति थी? [2]
 (iii) माली ने क्या सुझाव दिया? मोटे चपरासी की बात सुनकर माली क्या बोला? [3]
 (iv) कहानी के अन्त में क्या हुआ था? देर से मिलने वाला न्याय महत्वहीन होता है कैसे? [3]

7. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“पर, ‘सब दिन होत न एक समान’ अकस्मात् दिन फिरे और सेठ को गुरीबी का मुँह देखना पड़ा। संगी-साथियों ने भी मुँह फेर लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठानी भूखे मरने लगे।”

[महायज्ञ का पुरस्कार — यशपाल]

[Mahayagya Ka Puraskar -Yashpal]

- (i) अकस्मात् बुरा समय किसका आ गया था तथा बुरा समय आने से पहले उसकी दशा कैसी थी? [2]
- (ii) अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठ ने क्या उपाय सोचा? इस उपाय के लिए उन्हें किसके पास जाना पड़ा? [2]
- (iii) सेठ ने मार्ग में कौन-सा महायज्ञ किया था? क्या वह वास्तव में महायज्ञ था? समझाकर लिखिए। [3]
- (iv) कहानी का उद्देश्य लिखिए। [3]

- उत्तर (i) अकस्मात् बुरा समय सेठजी का आ गया था तथा बुरा समय आने से पहले सेठजी के पास धन-दौलत की कमी नहीं थी। वे उदार और धर्मपरायण थे। साधु-संत कभी उनके द्वार से खाली हाथ नहीं जाते थे। सबके लिए भंडार का द्वार खुला था। उन्होंने बहुत यज्ञ भी किए तथा दीन-दुःखियों को दान भी दिया।
- (ii) अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठानी ने सेठ को यज्ञ बेचने का सुझाव दिया। उस समय यज्ञों के क्रय-विक्रय की प्रथा प्रचलित थी। माना जाता था कि यज्ञ करने वाले को उसका फल मिलता था, व यज्ञ बेचने पर खरीदने वाले को वही फल मिलेगा। इस उपाय के लिए उन्हें दस-बारह कोस दूर कुंदनपुर के धन्ना सेठ के पास जाना पड़ा।
- (iii) सेठ ने मार्ग में एक कमजोर कुत्ते को देखा, जो भूख से छटपटा रहा था। सेठ चार रोटी लेकर चले थे, एक रोटी कुत्ते के सामने डाल दी। रोटी खाकर उसके शरीर में थोड़ी जान आई। वह सेठ को देखने लगा। सेठ ने दूसरी रोटी उसे दी कि वह चलने-फिरने लायक हो सके। सेठजी ने धीरे-धीरे बची दोनों रोटियाँ भी कुत्ते को खिला दीं और स्वयं पानी पीकर चल दिए। यही महायज्ञ मार्ग में सेठ ने किया। यह वास्तव में महायज्ञ था, क्योंकि सेठ ने खुद भूखे रहकर मरणासन्न कुत्ते को रोटियाँ खिलाई थीं और उसकी जान बचाई थी। प्रत्येक जीव पर दया करना, प्रत्येक जीव की मदद करना ही ईश्वर की सेवा है।
- (iv) कहानी का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि मनुष्य का परम कर्तव्य है, प्रत्येक जीव पर दया करना। जीव-मात्र की मदद ही ईश्वर की सेवा है। लेखक ने इस कहानी के द्वारा मानवता को सच्चा धर्म, सच्चा यज्ञ बताया है। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्टों को दूर करना महायज्ञ है, इसका फल अवश्य मिलता है।

साहित्य सागर—पद्य भाग (Sahitya Sagar-Poems)

8. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“लाठी में गुण बहुत है, सदा राखिये संग।
गहरि, नदी, नारी जहाँ, वहाँ बचावै अंग ॥

वहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।
दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै ॥
कह ‘गिरिधर कविराय’ सुनो हो धूर के बाठी ॥
सब हथियार न छौँड़ि हाथ महँ लीजै लाठी ॥

[कुंडलियाँ — गिरिधर कविराय]

[Kundaliya-Giridhar Kavi Rai]

- (i) इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई है? कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है? [2]
- (ii) लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है? [2]
- (iii) लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार? [3]
- (iv) कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात क्यों कर रहे हैं? अपने विचार व्यक्त करते हुए कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। [3]
- उत्तर (i) इस कुंडली में लाठी की उपयोगिता बताई गई है। कवि ने कहा है कि लाठी में बहुत गुण हैं, उसे हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। वह हमारी सुरक्षा के लिए बहुत उपयोगी है।
- (ii) अगर हमारे पास लाठी होगी, तो हमारे शरीर की सुरक्षा के काम आएगी। हमें रास्ते में कोई कुत्ता मिल जाए, जो हम पर आक्रमण करना चाह रहा हो, तो उसे लाठी द्वारा आसानी से भगाया जा सकता है। दुश्मन से भी बचा जा सकता है तथा नदी या नाले की गहराई लाठी द्वारा नाप लेने पर यात्रा सफल बनाई जा सकती है।
- (iii) लाठी मार्ग में गहरी नदी या नाला आ जाने पर उसकी गहराई नापने में सहायक होती है, उसकी गहराई नापकर उसे किस प्रकार पार किया जाए कि उसमें गिरें ना, ये सुनिश्चित किया जा सकता है। दूसरा यदि कोई दुष्ट कुत्ता हम पर झपटे, तो उसे लाठी की सहायता से भगाया जा सकता है। तीसरा दुश्मन से बचने में भी लाठी सहायक होती है। दुश्मन को लाठी से मारकर भगाया जा सकता है।
- (iv) कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात कर रहे हैं, क्योंकि वे लाठी का महत्त्व प्रतिपादित करना चाह रहे हैं। लाठी उस जगह पर भी काम आती है, जहाँ तलवार, धनुष आदि हथियार काम नहीं आते। यह सदैव रक्षा करती है तथा इससे स्वयं के लिए कोई खतरा नहीं होता। कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य सरल और व्यवहारिक भाषा में गंभीर और नीति-परक तथ्यों को समझाना है।

9. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खडे हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।

अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।”

[भिक्षुक — सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला']

[Bhikshuk-Suryakanth Tripathi-'Nirala']

- (i) पहली दो पंक्तियों में कवि ने क्या दृश्य प्रस्तुत किया है? [2]
- (ii) इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में क्या भाव उत्पन्न होते हैं? [2]
- (iii) क्या भिक्षुकों की मदद करना मानवीय धर्म नहीं है? यहाँ अभिमन्यु का उदाहरण कवि ने क्यों दिया है? [3]
- (iv) प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [3]

उत्तर (i) पहली दो पंक्तियों में कवि ने मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है। भिक्षुक और उसके बच्चों को अपनी भूख मिटाने के लिए सड़क पर पड़ी हुई जूटी पत्तलों को चाटने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उनके दुःखों का अंत वहाँ भी नहीं है। आवारा कुत्ते उनसे वह भी झपट लेने को अड़े हुए हैं।

(ii) इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में करुणा और दया के भाव उत्पन्न होते हैं। उनकी स्थिति पर तरस आता है और समाज में फैले आर्थिक अंतर पर खेद होता है।

(iii) भिक्षुकों की मदद करना मानवीय धर्म है, परन्तु उनकी मदद भिक्षा देकर नहीं, उन्हें काम दिलवाकर करना चाहिए। भिक्षा देने से भिक्षा-वृत्ति को बढ़ावा मिलता है। भिक्षुक को कार्य करने की प्रेरणा देकर उसकी मदद करना चाहिए।

यहाँ कवि ने अभिमन्यु का उदाहरण संघर्ष की प्रेरणा के लिए दिया है। जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में सात महारथियों से घिरने के बाद भी अभिमन्यु ने संघर्ष नहीं छोड़ा, उसी प्रकार भिक्षुक को भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए।

(iv) प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव यह है कि भिक्षुक की मार्मिक स्थिति को देखकर भी लोगों में मानवता जागृत नहीं होती है, उसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना सिखाना चाहिए। कवि का उद्देश्य लोगों की संवेदना को जागृत करना भी है।

10. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“मैं पूर्णता की खोज में

दर-दर भटकता ही रहा

प्रत्येक पग पर कुछ-न कुछ

रोड़ा अटकता ही रहा

पर हो निराशा क्यों मुझे ?

जीवन इसी का नाम है।

चलना हमारा काम है।”

[चलना हमारा काम है — शिवमंगल सिंह 'सुमन']

[Chalna Bamara -Kaam Hai -Shiv Mangal Singh 'Suman']

- (i) कवि ने मनुष्य के जीवन के बारे में क्या कहा है तथा क्यों? [2]
- (ii) कवि के अनुसार जीवन का महत्त्व किसमें है? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (iii) जीवन में सुख-दुःख और आशा-निराशा के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? अपने दुःखों और निराशा के लिए हमें किसको दोष देना उचित नहीं है तथा क्यों? समझाकर लिखिए। [3]

(iv) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने पाठकों को क्या संदेश दिया है? [3]

उत्तर (i) कवि ने मनुष्य के जीवन को अपूर्ण कहा है क्योंकि मनुष्य को कभी भी सब कुछ प्राप्त नहीं होता। फिर भी मनुष्य पूर्णता की खोज में लगा रहता है। कठिनाइयों के बावजूद मनुष्य पूर्णता पाना चाहता है।

(ii) कवि के अनुसार जीवन का महत्त्व निरंतर चलते रहने में है। परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, रुकना नहीं चाहिए। रास्ते में बाधाओं के आने से निराश नहीं होना चाहिए। रुकने का अर्थ मृत्यु होता है, अतः चलते रहना चाहिए।

(iii) जीवन में सुख-दुःख और आशा-निराशा के प्रति हमारा दृष्टिकोण समान होना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि सुख-दुःख और आशा-निराशा तो प्रत्येक के जीवन में आते-जाते रहते हैं, अपने कर्तव्य-पथ से कभी विमुख नहीं होना चाहिए।

अपने दुःखों और निराशा के लिए हमें विधाता को दोष देना उचित नहीं है, क्योंकि इस संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसके जीवन में दुःख नहीं आया हो। जीवन में उतार-चढ़ाव तो आते रहते हैं, अपनी बुद्धि को कमजोर नहीं होने देना चाहिए और अपने कर्म करते रहना चाहिए।

(iv) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने पाठकों को अपने कर्तव्य-पथ पर बिना रुके निरंतर चलने का संदेश दिया है। बाधाओं और परेशानियों से घबराए बिना निरंतर चलते रहना चाहिए। जो दृढ़ता के साथ कठिनाइयों का सामना करते हुए हर समय चलते रहें उन्हें ही जीवन में सफलता की प्राप्ति होती है।

नया रास्ता — सुषमा अग्रवाल

(Naya Raasta-Sushma Agarwal)

11. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

अमित मेज़ पर बैठा खाना खाने लगा। माँ भी उसके पास बैठ गई। बैठे-बैठे वह न जाने किन विचारों में खो गई और एकटक अमित की ओर ही देखती रही।

- (i) माँ अमित की तरफ़ देखते हुए क्या सोच रही थी? [2]
 (ii) दीपक कौन है? उन्हें किस बात का कार्ड मिला? [2]
 (iii) मधु के बारे में माँ ने अमित से क्या कहा? [3]
 (iv) माँ को घर में बहू की कमी क्यों अखरती थी? [3]

उत्तर (i) माँ अमित की तरफ़ देखते हुए सोच रही थी कि उससे दो वर्ष छोटे दीपक की शादी हो रही है। धनीमल के यहाँ से रिश्ता टूटने के बाद वह शादी के लिए तैयार ही नहीं होता। विवाह के विषय में बात करने पर वह कोई उत्तर नहीं देता है।

(ii) दीपक अमित के मामाजी का लड़का अर्थात् अमित की माँ का भतीजा है। अमित के परिवार को दीपक के विवाह का कार्ड मिला है। अमित की माँ इस विवाह में जाने के लिए उत्साहित हैं।

(iii) मधु की परीक्षा होने के कारण वह विवाह में नहीं जा पा रही थी। इसलिए वह उदास भी थी। इसी वजह से माँ भी चिंतित थीं कि वह उसे अकेले छोड़कर कैसे जा पाएँगी। वह अमित से कहती हैं कि मधु की भी शादी करनी है। पहले तुम्हारी शादी हो तो मधु की शादी में बहू के आने से मदद भी मिल जाएगी।

(iv) माँ को घर में बहू की कमी अखरती थी, क्योंकि अमित और मायाराम जी के फ़ैक्ट्री और मधु के कॉलेज जाने के बाद वह घर में अकेली हो जाती थीं। इसके अलावा घर के सारे काम अकेले को करने पड़ते थे, बहू होती तो उसका सहयोग भी मिल जाता।

12. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“दूसरे ही क्षण मीनू उसके सामने आ गई और खुशी से उसके हाथ चूम लिए। अरे मीनू, आज तो बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो। क्या बात है? नीलिमा ने पूछा।”

- (i) मीनू कौन है? उसकी प्रसन्नता का कारण क्या है? [2]
 (ii) ‘उसके’ सर्वनाम का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
 (iii) मीनू के चेहरे पर किस बात को सोचकर उदासी छा जाती है? मीनू की उदासी कब और किस प्रकार दूर होती है? समझाकर लिखिए। [3]
 (iv) प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर (i) मीनू दयाराम जी की बेटी है। वह उपन्यास ‘नया रास्ता’ की नायिका है। वह होशियार और समझदार है। उसकी प्रसन्नता का कारण यह था कि मेरठ में उसकी शादी की जहाँ बात चल रही थी, उनको फोटो पसंद आ गया था

और वह दूसरे दिन ही उसे देखने आने वाले थे।

(ii) ‘उसके’ सर्वनाम मीनू की बचपन की सहेली नीलिमा के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह मीनू के घर के पास ही रहती है। नीलिमा बहुत सुंदर है। उसका विवाह मेरठ में रहने वाले सुरेन्द्र के साथ होता है।

(iii) विवाह से सम्बन्धित पुरानी बातें सोचकर वह उदास हो जाती है। पहले भी कई लड़के उसके छोटे कद और साँवले रंग के कारण उसे नापसंद कर चुके थे। नीलिमा उसकी उदासी को भांपकर उसका मन हल्का करने के लिए अपनी कई फोटो दिखाती है। मीनू की उदासी कुछ कम होती है। तभी मीनू का भाई रोहित अखबार देते हुए बताता है कि एम. ए. का परीक्षाफल निकला है। मीनू प्रथम श्रेणी में पास होती है और खुश हो जाती है।

(iv) प्रस्तुत उपन्यास ‘नया रास्ता’ का उद्देश्य समाज में फैली दहेज प्रथा की समस्या को उजागर करना है। दहेज के कारण कितनी ही लड़कियों के विवाह टूट जाते हैं। कभी-कभी तो लड़की वाले ही इस प्रथा को बढ़ावा देते हैं। इसके साथ ही मीनू के माध्यम से प्रत्येक नवयुवती में नवचेतना व जागृति की भावना जगाना है ताकि वे आत्मनिर्भर बन अपनी मंजिल पा सकें। इसके लिए नारी को धैर्य, साहस व संयम से कार्य करना होगा।

13. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“परन्तु तुम ये तो सोचो कि आजकल शादी के बाद ही दावत दी जाती है। यदि हम प्रीतिभोज नहीं देंगे तो दुनिया वाले क्या कहेंगे और फिर बड़े घर की लड़की आ रही है। दावत नहीं देंगे तो सब लोग बात बनाएँगे।”

- (i) उपर्युक्त कथन किसने, किस अवसर पर कहा था? [2]
 (ii) ‘बड़े घर की लड़की’ किसको कहा गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
 (iii) उपर्युक्त कथन के विषय में अमित के क्या विचार हैं? वह इस शादी से सहमत क्यों नहीं है? धनीमल जी ने शादी में प्रस्ताव के साथ क्या लालच दिया था? [3]
 (iv) आजकल के मध्यवर्गीय परिवारों में विवाह आदि रीति-रिवाजों के अवसर पर होने वाले फिज़ूलखर्चों पर अपने विचार लिखिए। [3]

उत्तर (i) उपर्युक्त कथन अमित की माँ ने कहा था। अमित की शादी धनीमल जी की बेटी सरिता से तय हो गई थी, शादी में एक महीना शेष था। शादी की तैयारियाँ धूमधाम से चल रही थीं, इसी अवसर पर उपर्युक्त कथन कहा गया था।

(ii) ‘बड़े घर की लड़की’ धनीमल जी की बेटी सरिता को कहा गया है। सरिता का रंग मीनू से भी गहरा था। उसे घर के

काम-काज नहीं आते थे। उसे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में विशेष रुचि थी। वह विवाह के बाद अमित के साथ एक फ्लैट में अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी।

- (iii) अमित को यह सब पहले दिन से ही पसंद नहीं था, वह तो माँ-बाप के दबाव में आकर विवाह के लिए तैयार हुआ था। वह इस शादी से सहमत नहीं है क्योंकि उसे मीनू पसंद थी। दूसरा कारण यह था कि उसे समझदार लड़की चाहिए थी, जो उसके माँ-बाप का सम्मान करे और ध्यान रखे। सरिता को पढ़ाई और घर के कामों में रुचि नहीं थी।

धनीमल जी ने शादी के प्रस्ताव के साथ पाँच लाख की रकम का लालच दिया। उन्होंने यह भी कहा कि वे तीन लाख का एक फ्लैट विवाह में देना चाहते हैं, जिससे अमित और सरिता अलग गृहस्थी बसा सकें।

- (iv) आजकल के मध्यमवर्गीय परिवारों में विवाह आदि अवसरों पर फिज़ूलखर्चा बढ़ गई है। दिखावा अधिक हो गया है। सजावट, कपड़ों आदि पर अत्यधिक खर्च किया जाता है। खाने-पीने की चीज़ें इतनी होती हैं कि हर वस्तु को सब चख भी नहीं पाते और खाना बेकार में फिंकता है। विवाह के अवसर पर खर्च प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है।

एकांकी संचय

(Ekanki Sanchay)

14. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“काश कि मैं निर्मम हो सकती, काश कि मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती। हो पाती तो कुल, धर्म और जाति का भूत तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछुड़ती।”

[संस्कार और भावना — विष्णु प्रभाकर]

[Sanskar Aur Bhavna-Vishnu Prabhakar]

- (i) वक्ता कौन है? यह वाक्य वह किसे कह रही है? [2]
(ii) 'संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है' यह कथन एकांकी में किसका है? उसने ऐसा क्यों कहा? [2]
(iii) संस्कारों की दासता के कारण वक्ता को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? [3]
(iv) प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार ने क्या सन्देश दिया है? [3]

उत्तर (i) वक्ता अतुल की माँ है, जो संक्रांति काल की एक हिन्दू नारी है। उसने अपने बड़े बेटे की बीमारी की खबर सुनी है और यह वाक्य वह अपने छोटे बेटे अतुल की पत्नी उमा से कह रही है।

(ii) 'संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है' यह कथन एकांकी में बड़े बेटे अविनाश का है। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसकी माँ ने अपनी बड़ी बहू को विजातीय होने के कारण अपनाया नहीं था।

(iii) संस्कारों की दासता के कारण वक्ता को अपने बेटे से

बिछुड़ना पड़ा। वह अपने बेटे की सूरत देखने के लिए तरस रही थी। उन्हें दुःख था कि उनका बेटा बीमार रहा और उन्हें पता भी नहीं चला। कुल, धर्म और जाति में ही वह फँसी रही और दुःख भोगती रही।

- (iv) प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार विष्णु प्रभाकर ने संदेश दिया है कि समय और परिस्थितियों के साथ-साथ अपनी सोच में परिवर्तन लाना होगा। जाति व धर्म पर आधारित पुरानी मान्यताओं से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों को स्थापित करना होगा। आपसी संबंधों में भावनाओं को महत्त्व देना चाहिए। जातिवाद की पुरानी सोच का त्याग कर सम्बन्धों को बनाए रखने का संदेश प्रस्तुत एकांकी में है।

15. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“जानता हूँ युधिष्ठिर ! भली भाँति जानता हूँ। किन्तु सोच लो, मैं थककर चूर हो गया हूँ, मेरी सभी सेना तितर-बितर हो गई है, मेरा कवच फट गया है, मेरे शस्त्रास्त्र चुक गए हैं। मुझे समय दो युधिष्ठिर ! क्या भूल गए मैंने तुम्हें तेरह वर्ष का समय दिया था?”

[महाभारत की एक साँझ — भारत भूषण अग्रवाल]

[Mahabharat Ki Ek Sanjh-Bharat Bhusban Agarwal]

- (i) वक्ता कौन है? वह क्या जानता था? [2]
(ii) वक्ता इस समय असहाय क्यों हो गया था? क्या वह वास्तव में असहाय था? [2]
(iii) श्रोता कौन है? श्रोता को तेरह वर्ष का समय कैसे दिया था? क्या इस कथन को आप सही मानते हैं? [3]
(iv) वक्ता ने जो समय दिया था उसका उद्देश्य क्या था? क्या वह अपने उद्देश्य में सफल हो सका? स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर (i) वक्ता दुर्योधन है, जो महाभारत के युद्ध में घायल हो गया है, उसकी सेना बिखर गई है, कवच फट गया है और शस्त्र समाप्त हो गए हैं, पर वह अपनी हार मानने को तैयार नहीं हैं।

वह जानता है कि पांडव उससे डरते नहीं हैं और इस युद्ध के लिए वह स्वयं जिम्मेदार हैं, उसके सभी साथी युद्ध में समाप्त हो चुके हैं।

(ii) वक्ता इस समय असहाय था, क्योंकि उसके साथी युद्ध में मारे गए थे। वह स्वयं थक चुका था। उसकी सेना तितर-बितर हो गई थी, कवच फट गया था तथा शस्त्रास्त्र चुक गए थे। वह वास्तव में असहाय था।

(iii) श्रोता युधिष्ठिर है, जो पांडवों में सबसे बड़ा है तथा धर्मराज के नाम से जाना जाता है। श्रोता को दुर्योधन ने तेरह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास दिया था। यह समय इसलिए दिया था कि वे राज्य के अधिकारी न बन पाएँ, वह पांडवों को उनका अधिकार नहीं देना चाहता था। दुर्योधन ने अपने स्वार्थ के लिए तेरह वर्ष का समय दिया,

उसमें भी उन्हें मरवाने का प्रयास किया इसलिए यह कथन सही नहीं है।

- (iv) वक्ता ने जो समय दिया था, उसका उद्देश्य यह था कि तेरह वर्ष वन में रहकर पांडवों का उत्साह ठंडा पड़ जाएगा, उनके सहायक बिखर जाएँगे, उनकी शक्ति कम हो जाएगी, वे कमज़ोर पड़ जाएँगे और वह उन पर विजय पा लेगा।

वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया, क्योंकि पांडवों ने अपने अधिकारों के लिए युद्ध किया और वे विजयी भी हुए।

16. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“आज कुसमय नाच-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी। इसलिए मैंने कुँवर को वहाँ जाने से रोक दिया था। संभव था कि कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई काण्ड रच देता।”

[दीपदान — डॉ. रामकुमार वर्मा]

[Deepdan -Dr. Ram Kumar Verma]

- (i) उपर्युक्त कथन का वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
- (ii) नाच-रंग का आयोजन किसने और किस उद्देश्य से किया था? [2]
- (iii) बनवीर कौन है? उसका परिचय देते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए। [3]
- (iv) 'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता बताइए तथा एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने क्या शिक्षा दी है? [3]

- उत्तर (i) उपर्युक्त कथन की वक्ता कुँवर उदयसिंह की धाय माँ पन्ना है। पन्ना चितौड़ के महाराणा सांगा के छोटे पुत्र कुँवर उदयसिंह की धाय और संरक्षिका है। वह तीस वर्ष की खीचो जाति की राजपूतानी है। वह स्वाभिमानी, कर्तव्यनिष्ठ, वीर और दूरदर्शी है। वह ममतामयी माँ भी है। वह निडर है, वह देशभक्ति की मिसाल रखते हुए कुँवर

उदयसिंह की शय्या पर अपने पुत्र चंदन को लिटाकर पुत्र का बलिदान दे देती है। इस तरह पन्ना धाय इतिहास में सदा के लिए अमर हो गई।

- (ii) नाच-रंग का आयोजन पृथ्वीराज के दासी-पुत्र बनवीर ने किया था, उसका उद्देश्य था कि नगर-निवासियों का ध्यान नाच-रंग में लगा रहेगा और अवसर देखकर वह महाराणा और कुँवर उदयसिंह की हत्या करके राज्य पर एकाधिकार प्राप्त कर लेगा। महाराणा को मारने में तो वह सफल हो जाता है, पर पन्ना धाय की सूझबूझ से कुँवर उदयसिंह बच जाते हैं।

- (iii) बनवीर मेवाड़ के महाराज सांगा के भाई पृथ्वीराज का दासी-पुत्र है, जिसकी आयु करीब 32 वर्ष है वह महत्वाकांक्षी, क्रूर और विलासी है। वह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए दीपदान के उत्सव का आयोजन कर महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर देता है। उसने षड्यंत्र से सैनिकों को भी अपनी ओर मिला रखा है। कुँवर उदयसिंह को भी मारने जाता है और कुँवर की शय्या पर सोते हुए चंदन को कुँवर के धोखे में बेरहमी से मार देता है। वह एक अत्याचारी व्यक्ति है।


- (iv) इस एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' सर्वथा सटीक, सार्थक व उपयुक्त है। एकांकी का प्रारंभ बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव से होता है जिसमें महिलाएँ महल में बने कुंड में तुलजा भवानी की पूजा कर दीपदान करती हैं। वहीं पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा के लिए अपने जीवन के दीपक, अपने पुत्र चंदन के प्राणों का बलिदान देकर दीपदान करती हैं। वहीं बनवीर कुँवर उदयसिंह की हत्या कर यमराज को राणा सांगा के कुलदीपक का दान करता हुआ कहता है कि मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज, लो यह मेरा दीपदान है। इस प्रकार एकांकी का शीर्षक प्रासंगिक व सारगर्भित है।

एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने स्वामी भक्ति, वफादारी, त्याग और देशभक्ति की शिक्षा दी है। साथ ही वीरता, निडरता और दूरदर्शिता के गुणों को बढ़ावा दिया है।


□□□



Don't Stop Reading !


You never know what might be asked in the exam.



To download
Chapter-wise
Mind Maps
scan the code below





To download
Chapter-wise
Revision Notes
scan the code below

